अहंकार विनाश का मूल

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

अहंकार मानव के विनाश का मूल कारण है। अहंकार ज्ञान को भी नष्ट कर देता है। रावण बहुत बड़ा ज्ञानी था। वह शिवभक्त और वेदों का ज्ञाता था। विद्वता उसमें कूट–कूट कर भरी थी। किन्तु ज्ञान के कारण उसमें नम्रता न आकर अहंकार आ गया था जिसके कारण उसका विनाश हो गया। जो अहंकारी होता है उसका ज्ञान नष्ट हो जाता है। रावण जिस समय मरण शय्या पर पड़ा हुआ था तब श्रीराम ने लक्ष्मण को रावण से ज्ञान प्राप्त करने के लिए कहा। लक्ष्मणजी रावण के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करने का उपक्रम किया। किन्तु रावण ने लक्ष्मण की तरफ देखा भी नहीं। लक्ष्मण निराश होकर लौट आये। श्रीरामजी ने पूछा ज्ञान प्राप्त कर लिये। लक्ष्मणजी ने कहा कि रावण ने तो मेरी तरफ देखा ही नहीं। श्रीरामजी ने कहा कि कहां खड़े थे? लक्ष्मणजी ने कहा रावण के सिर के पास। रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए विनम्रता होनी चाहिए। अब पुनः जाकर रावण के पैरों के पास खड़े होकर ज्ञान की याचना करना। लक्ष्मणजी जब रावण के पास गये उसके पैरों के पास खड़े होकर प्रणाम किया और रावण ने लक्ष्मण को ज्ञान और नीति की बात बताई। विद्या विनम्रता से सीखी जाती है। अहंकार गुणों को नष्ट कर देता है। क्रोध, मान, माया, लोभ की चण्डाल चौकड़ी अहंकार का वर्धन करती है। एक के आने पर अन्य दुर्गुण अपने आप आ जाते हैं। अतः इन दुर्गुणों को अपने पास कभी नहीं आने देना चाहिए। शरीर में कर्ता भाव अहंकार है। यह मेरा है, यह तुम्हारा है यह भाव अहंकार को जन्म देता है। इससे कर्मबन्धन होता है। कर्म बन्धन के टूटने से आत्मा का स्वाभाविक रूप प्रकट होता है। अहंकार के नष्ट होने से विनम्रता और लघुता का आभास होता है। लघुता का अर्थ है– हल्कापन, विनम्रता, अच्छाई, निरहंकारता। लघुता मानव का एक बहुत अच्छा गुण है। प्रभुता का अर्थ है– अहंकार। जिस व्यक्ति में लघुता होती है, जिस व्यक्ति में विनम्रता होती है, जिस व्यक्ति में निरहंकारता होती है, उस व्यक्ति का सामाजिक विकास सांस्कृतिक विकास बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति

सहनशील और दूसरों को सम्मान देने वाला होता है। किन्तु जिस व्यक्ति में अहंकार होता है उसका धीरे–धीरे पतन हो जाता है। भगवान् श्रीरामचन्द्र और लंकापति रावण का दृष्टान्त इस संबंध में विचारणीय है। जब भगवान् राम और रावण की सेनाएं आमने–सामने आकर के खड़ी हुई तो भगवान् राम पैदल, बिना अस्त्र–शस्त्र के भालू–बन्दरों की सेना के साथ खड़े थे। दूसरी तरफ रावण रथ पर सवार और चतुरंगड़ी सेना के साथ अहंकार से युक्त युद्ध क्षेत्र में भगवान् राम को ललकार रहा था। यह युद्ध लघुता और प्रभुता का युद्ध था, जिसमें लघुता विजयी हुई और प्रभुता पराजित। लघुता का गुण शिक्षा, विद्या और दूसरों को सम्मान देने से प्राप्त होता है। विद्या को प्राप्त करने के बाद भी यदि लघुता नहीं आई तो समझना चाहिए कि विद्या का वास्तविक मूल्य अभी नहीं प्राप्त हुआ। जिस समय वृक्ष में फल आता है तो वृक्ष की शाखाएं नम जाती है। इसी प्रकार विद्या और विनय से सम्पन्न व्यक्ति नम्र बन जाता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे है कि विद्या की प्राप्ति के बाद भी उनमें नम्रता न आकर अहंकार आ जाता है और यह अहंकार उनके विनाश का कारण होता है।

वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और आगमों में यही बताया गया है कि मानव को विनयशील होना चाहिए। जिस समय रावण मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ था उस समय भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि रावण बहुत ज्ञानी है। उसके पास जाकर कुछ ज्ञान की शिक्षा लीजिए। लक्ष्मणजी जब अपने बड़े भाई की बात स्वीकार कर रावण के पास गये और उसके सिर के पास खड़े होकर ज्ञान प्राप्त करना चाहा तो रावण ने अपनी आंखे ही नहीं खोली। लक्ष्मणजी निराश होकर लौट आये और भगवान् राम को पूरा वृतान्त बता दिया। तब भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए लघुता और विनम्रता आवश्यक है। पुनः जाकर रावण के पैर के पास खड़े होकर ज्ञान की याचना करना। लक्ष्मणजी जब रावण के पास गये और उसके पैर के पास खड़े हुए तो रावण ने लक्ष्मण को अनेक विद्याओं का ज्ञान दिया। इस प्रकार लघुता जीवन के हर पड़ाव पर काम आती है। लघुता से जुड़ाव होता है और प्रभुता से बिखराव। एक परिवार में अनेक सदस्य पारस्परिक सौहार्द के साथ रहते है। इसका मुख्य कारण है कि बड़े लोग छोटों को स्नेह देते है और छोटे लोग बड़ों को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते है। इससे पारस्परिकता बनी रहती है, एक दूसरे का प्रेम और

स्नेह परिवार के सभी सदस्यों को मिलता रहता है, जिससे परिवार में एकजुटता बनी रहती है और परिवार उन्नति करता है, परिवार में बिखराव नहीं आता। यही बात समाज और राष्ट्र के संबंध में भी विचारणीय है। समाज में जहां हित चिंतन की बात हो समाज के हर सदस्य को इसके लिए मिलजुलकर कार्य करना चाहिए। विकास के किसी काम में समाज के हर व्यक्ति को मिलकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्र के संबंध में भी यह विचारणीय है। राष्ट्र को आंतरिक और बाह्य दोनों दृष्टियों से संबंध बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। राष्ट्राध्यक्ष का कर्त्तव्य होता है कि वह विश्व के अनेक देशों के साथ मित्रता का व्यवहार करें, पड़ोसी देशों के साथ सहअस्तित्व और भाईचारे का संबंध होना चाहिए। जिससे देश को बाह्य खतरों से सुरक्षा मिल सके। जो निरहंकारी होता है वह शान्त प्रकृति का होता है। पूर्ण ज्ञान शान्त की अवस्था है।